हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

टेस्ट-XIII/V (प्रश्नपत्र-1 : संपूर्ण पाठ्यक्रम)

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (N-M, J-S)–M–HL13/5

Name: सुमित कुमार पार्जय **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** FP/July-19/822

Center & Date: 13/08/2019 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 0847994

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

$10 \times 5 = 50$

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये:

(क) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में थियोसोफिकल सोसाइटी का योगदान

थियोसोफिकल सोसाइटी जो कि आयरलैण्ड में एक आन्दोलन के रूप में उभरा, भारत में एनी बेसेंट द्वारा प्रचारित-प्रसारित किया गया।

थियोसोफिकल सोसाइटी वेदों तथा उपनिषदों को प्रमाणिक मानता था तथा उन्हें जीवन-दर्शन में उतारने की सलाह देता था। अपनी इन्हीं मान्यताओं के प्रचार के लिए थियोसोफिकल सोसाइटी ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इन्होंने हिन्दी को जन-संवाद के भाषा के रूप में ग्रहण किया। इनके वाद-विवाद, भाषण इत्यादि हिन्दी में होते थे। कई सारे पाश्चिम के ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद किया गया। थियोसोफिकल सोसाइटी की पत्र-पत्रिकाएँ भी हिन्दी में प्रकाशित होती थी। इन्होंने भारत-भ्रमण कर लोगों को हिन्दी भाषा में ही उपनिषद् इत्यादि का महत्व बताया। होम-रुल आन्दोलन ने इस प्रक्रिया को एक नई दिशा दी और हिन्दी पूरे देश को एक सुत्र में बाँध सकने वाली भाषा के रूप में उभरी। इस प्रकार थियोसोफिकल सोसाइटी ने हिन्दी के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) साहित्यिक अवधी की सीमाएँ

अवधी पूर्वी हिन्दी की एक प्रमुख बोली है। एक समय था जब तुलसीदास तथा सूफी कवियों ने अवधी को अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा दिया था। मध्यकालीन साहित्य के दो प्रमुख ग्रन्थ "पद्मावत" तथा "रामचरितमानस" हिन्दी में ही लिखे गए। अवधी जैसी मधुर तथा उदात्त्य को धारण कर सकने वाला गुण किसी अन्य भाषा में नहीं मिलता।

हालाँकि अवधी की कुछ सीमाएँ भी हैं

(1) इसमें मुक्त प्रवाह तथा चंचलता जैसे गुण धारण करने की क्षमता नहीं है। यही कारण है कि कृष्ण-लीला के अधिकांश काव्य ब्रज में लिखे गए।

(2) यह उदात्त तथा गंभीर विषयों को बड़ी ही खूबसूरती से व्यक्त करती है परन्तु शृंगार जैसे विषयों के लिए ब्रज-भाषा जैसी क्षमता नही है।

(3) प्रबन्ध काव्य अवधी में बड़े ही आसानी से लिखे जा सकते हैं, परन्तु मुक्तक के लिए तुलसीदास जैसे कवियों को भी (~~पदावली~~ कवितावली) ब्रज का सहारा लेना पड़ा।

(4) सामान्य जनता के लिए यह ब्रज से ज्यादा कठिन प्रतीत होती है — एक समय में ब्रज राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित थी, अवधी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को कभी यह सुयोग नहीं मिला।

अपनी तमाम कमियों के बावजूद अवधी एक अत्यन्त ही सजीव तथा प्रभावशाली भाषा है, अन्यथा "राम-चरितमानस" कभी इतना पूज्य न बन पाता।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 19वीं शताब्दी में 'खड़ी बोली' के विकास में प्रेस की भूमिका

19 वीं शताब्दी में जिन कारणों से खड़ी बोली अचानक से उठकर ब्रज भाषा का स्थान ग्रहण कर लेती है, उनमें प्रेस भी एक प्रमुख कारण है।

प्रेस की भूमिका

(1) पत्र - पत्रिकाओं के प्रकाशन से हिन्दी खड़ी बोली सम्पर्क भाषा के रूप में स्थापित होती है।

(2) दैनिक पत्र - पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू हुआ, जिससे हिन्दी न केवल परिष्कृत होकर उभरी, बल्कि सामान्य जन - जीवन के आचार - व्यवहार का हिस्सा बनी।

(3) कवि - वचन सुधा, बंगदूत, हरिश्चन्द्र मैगज़ीन इत्यादि पत्रिकाएँ अत्यन्त ही सरस - सजीव भाषा में लिखी हुई थी। इससे खड़ी बोली को जन - सुग्राह्य बनने का अवसर मिला।
— "हिन्दी नए चाल में ढली, 1873 में"

(4) ब्रजभाषा को राजाओं का संरक्षण मिलना बन्द हो गया था, ऐसे समय में वही भाषा उसका स्थान ले सकती थी, जिसे तत्कालीन समाज के ~~बुद्धिजीवि~~ बुद्धिजीवी संरक्षण देते, खड़ी बोली को यह संरक्षण प्राप्त हुआ।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार प्रेस ने खड़ी बोली के विकास तथा उत्थान में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) बोली को भाषा का दर्जा दिये जाने हेतु उपयुक्त कसौटियाँ

भोजपुरी, हरियाणवी इत्यादि को भाषा की दर्जा दिए जाने की मांग बहुत समय से चल रही है। इस सन्दर्भ में यह जान लेना आवश्यक है कि किसी भी बोली को भाषा का दर्जा दिए जाने के प्रतिमान क्या हैं?

(1) बोली को एक विशेष भू-भाग द्वारा प्रथम भाषा (बोली) के रूप में प्रयोग में लाया जाता हो।

(2) बोली किसी अन्य मान्यता-प्राप्त भाषा से इस तरह भिन्न हो कि दोनों में पर्याप्त भेद किया जा सके।

(3) लोक-साहित्य तथा अन्य साहित्य प्रचुर मात्रा में लिखा गया हो।

(4) बोली को आए इतना समय गुजर चुका हो कि उसका स्वयं का एक स्थायी शब्दकोष, व्याकरण इत्यादि बन चुका हो।

(5) बोली के लिए एक अलग लिपि हो।

इन कसौटियों के आधार पर पर्यवेक्षण करके बोली को भाषा का दर्जा दिए जाने पर विचार किया जा सकता है, जिस पर वर्तमान समय में बहुत ही कम बोलियाँ खड़ी उतरती हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लाला लाजपतराय का योगदान

राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में जिन राष्ट्रीय नेताओं का अमूल्य योगदान रहा उनमें लाला लाजपत राय प्रथम पंक्ति में खड़े नजर आते है।

(1) आर्य समाज से जुड़े होने के कारण हिन्दी के विकास को इनका समर्थन और सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ।

(2) पंजाब में डी० ए० वी० कॉलेजों की स्थापना तथा हिन्दी के पठन - पाठन में इन्होंने अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(3) इन्होंने यंग इंडिया, मजिनी - चरित्र इत्यादि हिन्दी भाषा में ही लिखा।

(4) कांग्रेस में हिन्दी भाषा के विकास को लेकर आवाज उठाने में लाला लाजपत राय का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

(5) हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय भाषा के साथ - साथ ये देवनागरी को राष्ट्रीय लिपि बनाने हेतु भी प्रतिबद्ध थे।

इस प्रकार लाला लाजपत राय ने हिन्दी तथा हिन्दी जगत की अभूतपूर्व सेवा की।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लाला लाजपतराय का योगदान

राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में जिन राष्ट्रीय नेताओं का अमूल्य योगदान रहा उनमें लाला लाजपत राय प्रथम पंक्ति में खड़े नजर आते है।

(1) आर्य समाज से जुड़े होने के कारण हिन्दी के विकास को इनका समर्थन और सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ।

(2) पंजाब में डी० ए० वी० कॉलेजों की स्थापना तथा हिन्दी के पठन - पाठन में इन्होंने अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(3) इन्होंने यंग इंडिया, मजिनी - चारित्र इत्यादि हिन्दी भाषा में ही लिखा।

(4) कांग्रेस में हिन्दी भाषा के विकास को लेकर आवाज उठाने में लाला लाजपत राय का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

(5) हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय भाषा के साथ - साथ ये देवनागरी को राष्ट्रीय लिपि बनाने हेतु भी प्रतिबद्ध थे।

इस प्रकार लाला लाजपत राय ने हिन्दी तथा हिन्दी जगत की अभूतपूर्व सेवा की।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में "अवधी" का विकास सूफी काव्यधारा के साथ शुरू होता है जो तुलसीदास के रामचरितमानस के साथ चरमोत्कर्ष को प्राप्त करता है।

मुल्ला दाउद की "चंदायन" या "लोरिकहा" को अवधी में रचित प्रथम महत्वपूर्ण ग्रन्थ माना जाता है। सूफी विचारधारा को समेटे यह रचना अवधी के विकास को एक नई दिशा देती है।

इसके बाद सूफी रचनाओं का एक सिलसिला सा शुरू होता है। कुतुबन की मृगावती से लेकर मंझन की मधुमालती तक, शेखनबी की ज्ञानदीप से लेकर हंस-जवाहिर तक अवधी सूफी काव्यधारा के साथ घुल-मिल जाती है। लोक-कथाओं पर आधारित इन रचनाओं को पूर्वी भारत के हिस्सों में प्रसिद्धी मिलती है और इसी के साथ अवधी का विकास भी होता जाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परन्तु एक रचनाकार जो कि अवधी के विकास की गति को एक ही झटके में कई गुना कर देते हैं — वे हैं मलिक मुहम्मद जायसी।

अखरावट, पद्मावत, आखिरी कलाम जैसी रचनाओं के माध्यम से मलिक मुहम्मद जायसी अवधी भाषा के साहित्यिक विकास को एक नई दशा और दिशा देते हैं। पद्मावत इस समय का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण काव्य है, जिसका आधार उत्तर भारत में प्रचलित एक लोक-कथा है। "पद्मावत" जैसी रचना ने अवधी को जन-सामान्य की भाषा बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इन रचनाओं के माध्यम से अवधी एक परिनिष्ठित भाषा के रूप में उभरी। "दिवंगरा", "नहवट-नीरु" जैसे शब्द अब लोक-सामान्य न रहकर साहित्यिक शब्दावली में स्थान पा जाते हैं। अवधी पहली बार यह प्रदर्शित करती है कि वह काव्य के प्रबंधता जैसे गुणों को धारण करने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में सक्षम है। प्रतीक से लेकर अलंकार तक, द्वंद से लेकर बिम्ब तक, काव्य के हर गुणों का दर्शन इन रचनाओं में होता है।

"उठै बवंडर थिकै पहारा" — बिम्ब

हो या "मानुस प्रेम भयउ बैकुंठी" — प्रतीक

अवधी साहित्यिक भाषा के रुप में सफलता के चरम चुमती है। मंझन की मधुमालती का भी जिक्र इस प्रक्रिया में उल्लेखनीय है, जो सूफी काव्यधारा से थोड़ी सी अलग होने के बावजूद एक अत्यन्त सफल रचना है, और अवधी के विकास में एक अमूल्य योगदान देती है।

सूफी काव्यधारा के अधिकांश रचनाओं में लोक-जागरण का तत्व उपस्थित है, जो साहित्यिक रचनाओं के सफलता का एक महत्वपूर्ण अंग है। चूँकि अवधी इन गुणों को धारण कर सकने में सक्षम थी, अवधी का विकास सफलता की नई सीढ़ीयाँ चढ़ता गया। जिसका परिणाम "रामचरितमानस" जैसी रचना है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी के मानकीकरण के क्षेत्र में व्याकरण संबंधी समस्याओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी का मानकीकरण एक जारी रहने वाली प्रक्रिया है, जिसको अभी तक स्थायी रूप प्रदान नहीं किया जा सका है।

इसी सन्दर्भ में व्याकरण - संबंधी कुछ समस्याएँ विद्यमान हैं, जिन्हें यह उल्लिखित किया जा रहा है।

(1) कारक

संज्ञा के साथ कारक अलग से तथा सर्वनाम के साथ मिले जाते हैं। कई बार इस नियम का उल्लंघन होता है।

जैसे — "राम ने मुझ से पूछा"

(2) संज्ञा

जातिवाचक संज्ञा को लेकर कुछ समस्याएँ हैं.

जैसे - (सेना)

(3) क्रिया

अभी भी ब्रज भाषा की तरह "चल्यौ" इत्यादि का प्रयोग देखने को मिलता है।

(4) वचन

पूर्वी क्षेत्र में मैंने की जगह हमने का प्रयोग एक बड़ी समस्या है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिंग

— प्राकृतिक वस्तुओं जैसे नदी, तिथि इत्यादि के लिंग निर्धारण में मानकता नहीं है

— कुछ स्त्रीलिंग है, जबकी इक पुल्लिंग

काल

काल निर्धारण में एक से अधिक तरह के रूपों का प्रयोग एक बड़ी समस्या है।

जैसे — कई जगह "क" रूप भविष्यकाल के लिए प्रयुक्त होता है तो कई जगह भूतकाल के लिए।

योजक चिन्हों का प्रयोग

योजक चिन्हों का भी अभी तक मानकीकरण नहीं किया जा सका है।

जैसे — राम ने कहा कि तुम जाओ
तथा राम ने कहा — तुम जाओ

इस प्रकार हम देखते हैं कि व्याकरण संबंधी मानकीकरण का अभी भी एक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

स्पष्ट रूप निश्चित नहीं है, इस दिशा में अतिशीघ्र काम किए जाने की आवश्यकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के नामकरण पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि के नामकरण के सम्बन्ध में कई प्रकार की मान्यताएँ हैं। एक-एक कर हम उन्हें देखते हैं:

(1) "देव" शब्द को आधार मानकर

"देव" शब्द को आधार मानकर देवनागरी की व्याख्या करने वाले आलोचक इसे देव वाणी अर्थात संस्कृत से उपजी होने के कारण देवनागरी नामकरण के समर्थक हैं।

ब्राह्मी लिपि → देवनागरी (संस्कृत)

(2) देव अर्थात चन्द्रगुप्त द्वितीय (समुद्रगुप्त) का इस लिपि का संरक्षण से भी कई लोग देवनागरी का संबंध देखते हैं।

(3) एक ताबीज पर लिखे कुछ शब्दों से देवनागरी की पहचान होने के कारण भी इसका देवनागरी नाम कुछ आलोचकों के नजर में उपयुक्त है।

(4) कुछ लोग इसे देवताओं की वाणी कहकर देवनागरी नाम देते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(4) कुछ लोग "नगर" को आधार मानकर भी देवनागरी की व्याख्या करते हैं।

— जैसे देवनागरी नगर में उत्पन होने के कारण 'देवनागरी' कहलाई

— देवनगर अर्थात वाराणसी में उत्पन होने के कारण

(5) कुछ लोग देव अर्थात चन्द्रगुप्त द्वितीय की राजधानी पाटलीपुत्र को भी देवनगर मानते हैं, और देवनागरी लिपि का सम्बन्ध पाटलीपुत्र से जोड़ते हैं।

इन सारे तथ्यों में कुछ न कुछ सच्चाई अवश्य है, परन्तु कोई भी तथ्य देवनागरी के नामकरण की सम्पूर्ण व्याख्या नही करता। इस सन्दर्भ में सबसे सटीक ब्राह्मी लिपि (देववाणी - संस्कृत) से देवनागरी लिपि का सम्बन्ध है जो काफी हद तक इस नामकरण की व्याख्या करने में सक्षम हो पाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) 'कहानी का रंगमंच'

कहानी का रंगमंच यूँ तो एक अत्यन्त प्राचीन तथ्य है, जिसमें कहानियों को तोड़-मरोड़कर नाटक के रूप में मंचन किया जाता था।

परन्तु वर्तमान सन्दर्भ में इसका जन्म "देवराज अंकुर" द्वारा माना जाता है। देवराज अंकुर ने निर्मल वर्मा के तीन कहानियों का सफल मंचन कर (बीक एण्ड, चीड़ों पर चान्दनी, परिन्दे) कहानी के रंगमंच को एक नई दिशा दी।

बाद में राजेन्द्र यादव, उपेन्द्रनाथ अश्क, अमरकान्त इत्यादि के कहानियों का भी सफल मंचन हुआ। आधुनिक समाज के यथार्थ को सीमित समय में दिखाए जाने के लिए कहानी का रंगमंच एक अत्यन्त सशक्त माध्यम है। अमरकान्त की कहानी "दोपहर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का भोजन" मध्यवर्गीय दर्शकों के बीच अत्यन्त प्रसिद्ध है। कहानी का रंगमंच आज अपनी एक अलग पहचान बना चुका है, जिसका अपना एक वफादार दर्शक वर्ग है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'पल्लव' की 'भूमिका' का महत्त्व

विलियम वर्ड्सवर्थ के "लिरिकल बैलेड्स" ने जो काम पाश्चिम जगत में किया था, हिन्दी साहित्य जगत में वही काम पल्लव की भूमिका ने किया है।

पल्लव की भूमिका निम्न कारणों से महत्वपूर्ण है।

(1) खड़ी बोली की ब्रजभाषा के जगह "काव्यभाषा" के रुप में स्थापना

(2) लिंग, समास-निर्णय इत्यादि पर विचार तथा एक मान्य प्रतिमान की स्थापना

(3) निराला ने मुक्त छंद की अवधारणा भी पल्लव की भूमिका के माध्यम से हमारे सामने रखी है।

(4) अलंकार को कस सजावट की सामग्री न मानकर उसे काव्य-सौन्दर्य के ~~की~~ एक महत्वपूर्ण भाग के रुप में अभिव्यंजित किया गया है।

इस प्रकार पल्लव की भूमिका तथा पंत की परिमल

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

की भूमिका ने खड़ी बोली हिन्दी को सर्वमान्य बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

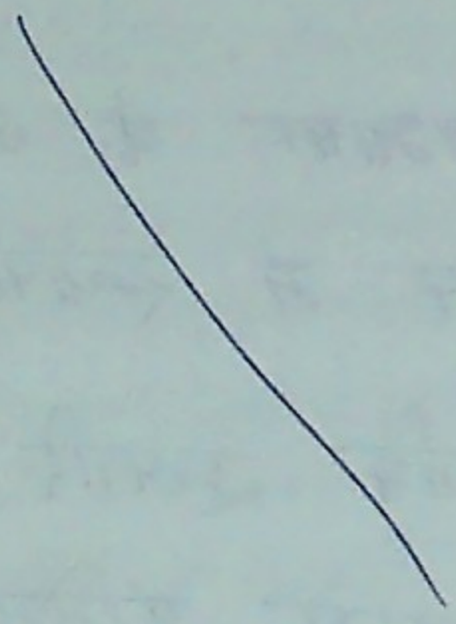

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अज्ञेय की काव्यानुभूति

अज्ञेय मूलतः प्रयोगवाद के कवि रहे है। हालांकि चार-सप्तकों के माध्यम से उन्होंने प्रगतिवाद से लेकर जनवादी कविता तक का सफर तय किया है।

अज्ञेय का काव्य मध्यवर्ग के मन में निरंतर चलने वाले उथल-पुथल का काव्य है, यह सत्ता और सृजन के संघर्ष का काव्य है। यह काव्य है समाज में रहकर भी अपने व्यक्तित्व को अक्षुण बनाए रखने का, विश्वचेतस् तथा आत्मचेतस् के बीच समन्वय स्थापित करने का।

"भग्नदूत" से लेकर "हरी घास पर क्षण भर" तक अज्ञेय का काव्य-रचना का सफर अत्यन्त अनूठा रहा है। अज्ञेय की कविताओं में प्रतीक, बिम्ब, अलंकार का नवीन रूप देखने को मिलता है।

"महाशून्य वह महामौन/
जो शब्दहीन सब में गाता है"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

अज्ञेय सृजन के महत्व को स्थापित करने वाले कवि हैं। अज्ञेय की काव्यानुभूति भले ही जन-सुग्राह्य न हो परन्तु साहित्य को जानने समझने वाले लोग इसे प्रशंसित किए बगैर नहीं रह सकते।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) छायावाद के नए अलंकार

छायावाद जिन कारणों से अत्यन्त चर्चा का विषय रहा है, उनमें एक है — छायावादी कविताओं में प्रयुक्त नवीन अलंकार।

(1) मानवीकरण अलंकार

जहाँ निर्जीव तथा काल्पनिक वस्तुएँ सजीव रूप में नजर आती हैं।

"संध्या परी मेघमय आसमान से
उतर रही
धीरे - धीरे - धीरे"

(2) ध्वन्यर्थ व्यंजना

विम्बात्मकता तथा अलंकार का एक सूत्र में पिरोने के काम छायावादी कवि बखूबी जानते हैं।

"झर - झर - झर
निर्झर गिरि सर से"

(3) उपमा अलंकार

नवीन उपमाओं के प्रयोग को कोई छायावादी कवियों से सीखे।

"बच्चे के तुतले भय से"
"वेदना के सुरीली हवा से"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार हम देखते हैं कि छायावादी कवियों ने नवीन अलंकारों के प्रयोग में अत्यन्त सफलता अर्जित की है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'परख' उपन्यास की 'कट्टो'

जैनेन्द्र

"परख" ~~मोहन राकेश~~ ~~तथा~~ द्वारा रचित एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण उपन्यास है।

इस उपन्यास में ~~परख~~ "कट्टो" को एक अत्यन्त ही संवेदनशील, दयालु तथा प्रेम के लिए सब-कुछ का समर्पण कर देने वाली औरत के रूप में दिखाया गया है।

सत्यधन द्वारा ठुकरा दिए जाने पर भी उसे सत्यधन पर गुस्सा नहीं आता। बिहारी के साथ एक सामान्य सी जिन्दगी जीने के लिए तैयार हो जाती है। बुरे समय में सत्यधन की मदद के लिए सबसे पहले आगे आती है।

ऐसा समर्पण, ऐसी दया, ऐसा त्याग, ऐसी सहनशीलता, ऐसी दया, ऐसा धैर्य उपन्यास के किसी भी अन्य पात्र में देखने को नहीं मिलता। कट्टो का चरित्र हिन्दी उपन्यास जगत की एक अप्रतिम उपलब्धी है और कट्टो एक अमर चरित्र। फ्रॉयड के मनोविज्ञान से

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रभावित कड़ी के चरित्र के अन्तर्जगत का सूक्ष्मीकरण इसे और भी महत्वपूर्ण बना देता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) बिहारी रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि क्यों माने जाते हैं? सोदाहरण उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

बिहारी रीतिकाल के सबसे प्रसिद्ध रचनाकार है। महज एक रचना ("बिहारी सतसई") के आधार पर इतनी लोकप्रियता किसी अन्य रचनाकार के वश की बात नहीं। जाहिर सी बात है कि इतना कम लिखने के बावजूद कोई रचनाकार इतनी प्रसिद्धी पा जाए तो उसमें कोई-न-कोई बात तो अवश्य होगी।

बिहारी: एक सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में

बिहारी के दोहों में समास तथा समाहार क्षमता अद्वितीय है। बहुत सारी बातों को चन्द पंक्तियों में समेटने की कला बिहारी से सिखी जा सकती है।

"कहत नटत रीझत खीजत मिलत खिलत लजियात
भरे भौन में करत हैं नैननु ही सों बात"

अब इस दोहे का अगर विस्तार किया जाए तो एक कहानी से कम क्या बनेगा। बिहारी के इसी गुण को भिखारीदास कहते हैं — "सतसैया के दोहरे ज्यों नाविक के तीर देखन में छोटन लगैं घाव करे गंभीर"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी की कविताएँ श्रृंगार के अप्रतिम लोक का दर्शन करा ले आती है जहाँ श्रृंगार-रस वर्षा की बूँदों की भाँति टपकता रहता है।

"बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय
सौंह करे भौंहु हँसै दैन कहे लरी जाय"

बिहारी की कविता बिम्ब निर्माण के क्षेत्र में बाकी किसी भी रचना से हजार मील आगे नजर आती है।

"राते आवत चालै जात उत
चलत छह-सातक हाथ"

अलंकार के प्रयोग की क्षमता तुलसीदास के अनुप्रास अलंकार के प्रयोग की याद दिला देती है।

"कनक कनक ते सौ गुना मादकता अधिकाय
वह खाय बौरात है — — —"

बिहारी के कविताओं में छन्दों का वैविध्य भले ही ज्यादा न हो लेकिन जो कुछ है, वह उस क्षेत्र का सर्वश्रेष्ठ है। बिहारी के कविताओं का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मूल्यांकन करते समय इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि बिहारी रीतिकाल के कवि हैं जो दरबार के मनोरंजन के लिए लिखते हैं — इसके बावजूद बिहारी के दोहों में नीति, भक्ति तथा लोक समस्याओं का चित्रण बिहारी की सर्वश्रेष्ठता को और बढ़ा देता है।

जैसे —

"कहति न देवर की कुमति, कुल-कलह डराति"

एक और देवर के गलत इरादों को इसलिए नहीं कह पा रही कि इससे उसके खानदान की नाक कटेगी। एक आम जीवन की समस्याओं को इस रूप में प्रस्तुत करने वाला दूसरा कवि नहीं है।

बिहारी एक और मायने में सर्वश्रेष्ठ नजर आते हैं — जहाँ एक ओर दरबारी कविताएँ राजसी चरित्रों को आधार बनाकर लिखी जाती थी — वहीं बिहारी मध्यवर्गीय स्त्री-पुरुषों की सहज संवेदनाओं पर लिखते हैं। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि काव्यगत सौन्दर्य का प्रश्न हो

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

था उसमें निहित भाव का बिहारी रीतिकाल की तमाम कमियों के बावजूद एक सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में हमारे सामने आते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'जनवादी कहानी' का परिचय दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जनवादी कहानी 1970 के दशक में पनपा एक आन्दोलन था जो एक तरीके से प्रेमचन्द की जन सामान्य की समस्याओं पर लिखी गई कहानियों को पुन: हिन्दी साहित्य जगत में वापस लाना चाहता था।

1960 के दशक के नक्सली के निर्वकता बोध, अवसाद, अपरिचय इत्यादि विषयों पर लिखे जा रहे कहानियों से तंग आकर जनवादी कहानी की स्थापना के लिए पहल हुई। 1974 में जनवादी लेखक संघ की स्थापना ने इसे मूर्त रूप दिया।

जनवादी कहानी निम्न-वर्ग की समस्याओं को अपने चरम-यथार्थ के साथ जन-सुग्राह्य भाषा में सामने लाने के लिए प्रतिबद्ध है। भूखमरी, गरीबी, आशिक्षा, दलितों पर किए जा रहे अत्याचार, सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार, समाज में व्याप्त विषमता इत्यादि इन कहानियों का विषय है।

जनवादी कहानी के महत्वपूर्ण लेखकों में नागार्जुन,

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अमृतलाल नागर, उपेन्द्र नाथ अश्क, संजीव, उदयप्रकाश इत्यादि प्रमुख हैं।

"अपना गाँव",
रेहन पर रग्घू, घर के अंदर, सरला चाची, बगीचे में इत्यादि जनवादी धारा की प्रमुख कहानियाँ हैं।

आजादी के बाद उपजा असंतोष ज्यों का त्यों व्याप्त है — आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक किसी भी तरह से एक आम भारतीय की जिन्दगी सुधरी नहीं है। उस पर हो रहे अत्याचार (बेलछी हत्याकांड) से लेखक समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को महसूस करता है और उनकी समस्याओं को जनवादी कहानी के माध्यम से हमारे सामने लाता है।

जनवादी कहानी अत्यन्त ही सपाट तथा नाटकीय तत्वों से रिक्त है, भाषा अत्यन्त ही साधारण तथा जन-सुग्राह्य है। इन सबके बावजूद ये कहानियाँ हमारे मानस-पटल पर एक न मिटने वाली छाप छोड़ जाती हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्मल वर्मा के यात्रा साहित्य के वैशिष्ट्य को रेखांकित कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निर्मल वर्मा ने यात्रा - साहित्य के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया है। उनकी सबसे प्रमुख रचना है — "चीड़ों पर चान्दनी" जिसमें उन्होंने देश के भीतर तथा विदेशों की कई सारे यात्रा - वृतांतों को संग्रहित किया है। उनके यात्राओं का वर्णन अत्यन्त ही सरस तथा रोचक होता है।

प्राकृतिक दृश्यों के मनोहारक वर्णन के अलावा वहाँ के आर्थिक - सामाजिक - राजनीतिक तथ्यों से भी हम परिचित हो पाते हैं। जैसे कि - आयरलैण्ड के सन्दर्भ में वे लिखते हैं कि यहाँ कि हवा इतनी साफ है कि पोटली भर के दिल्ली ले जाने का मन करता है।

ऐसे वर्णन पर्यावरण के प्रति हमारी जिम्मेदारी की हमें याद दिलाते हैं। विदेशों में वहाँ के व्यक्तियों द्वारा की गई बात चीत को भी निर्मल वर्मा ने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इन यात्रा वृतान्तों में शामिल किया है। निर्मल वर्मा सामाजिक परिदृश्य में भारत तथा अन्य देशों के शासन-सम्बन्धी तथ्यों का भी जिक्र करते चलते हैं। आम जीवन की अच्छी आदतों को वर्णित कर पाठकों को उसे अपनाने की सलाह भी देते जाते हैं — जैसे — "वहाँ के नारी-पुरुषों का बच्चा गोद लेने के प्रति इतनी तन्मयता और सहृदयता मेरे जेहन को सिहरा देती है, "अतिथिदेवो भव:" का पालन करने वाले हम भारतीयों को इनसे कुछ सीखना चाहिए"।

इस प्रकार हम देखते हैं कि निर्मल वर्मा का यात्रा-साहित्य अत्यन्त ही विस्तृत है जिसमें जीवन के हर पक्ष/पहलू को छुआ गया है। निर्मल वर्मा ने यात्रा-साहित्य को हिन्दी-साहित्य के मुख्य धारा में लाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) क्या गोस्वामी तुलसीदास का कलियुग-वर्णन तद्युगीन अमानवीय स्थितियों का ही आख्यान है? सुचिंतित उत्तर दीजिये। 20

एक महान लेखक की पहचान दो कारणों से होती है

(1) वह अपने समय के समस्याओं को पहचान पाने में कितना सक्षम है तथा आज के समय में वे कितने प्रासंगिक हैं।

(2) उन समस्याओं का समाधान काव्य में है या नहीं।

इन दोनों दृष्टियों से तुलसीदास एक महान रचनाकार के रूप में हमारे सामने आते हैं।

अपने समय की समस्याओं की पहचान तो वो बखूबी करते हैं, परन्तु एक चीज जो उसे और भी महत्वपूर्ण बना देती है कि कलियुग- वर्णन (तत्कालीन समस्याओं का वर्णन) न केवल उस समय की बल्कि वर्तमान अमानवीय स्थितियों को उजागर कर पाने में भी अत्यन्त सक्षम है।

उदाहरण- स्वयं तुलसी दास इन पंक्तियों को देखते हैं—

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"काले - बारहि बर दुकाल पड़े
बिन अन्न दुखी सब लोग मरे"

अब यह समस्या केवल तुलसीदास के समय की नही है बल्कि हमारे वर्तमान समय की भी है। सुखा पड़ना, बाढ़ आना, सुनामी इत्यादि समस्याएँ आज के समय मे ज्यादा हैं। सतत् विकास उद्देश्य (UN) इस संदर्भ में 17 उद्देश्यों के प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील है।

ठीक उसी तरह नौकरी न मिल पाने की समस्या जो तुलसी दास द्वारा वर्णित है, वह आज की समस्या ज्यादा है।

"बनिक को बनिज
भिखारी को न भीख बलि"

भारत में नौकरी न मिल पाने की समस्या की दर पीछले पचास सालों में सबसे ज्यादा इस साल है (सरकार की एक रिपोर्ट)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"पराधीन सपनेहुँ सुख नाही"

पितृसत्तात्मक समाज की समस्या भी उस समय थी, आज भी है और अगर हमारी सोच को नहीं बदला गया तो आगे भी बनी रहेगी।

इसी तरह जाँति-पाँति की समस्या
↓
"(जाँति पाँति न पूछौ काहुँ की जाँति-पाँति)" हो या फिर दलित वर्ग पर तथाकथित उच्च जाति द्वारा किए गए अत्याचार की समस्या तुलसीदास द्वारा रचित दोहे आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने उस समय थे।

तुलसीदास ने उन समस्याओं के समाधान हेतु "रामराज्य" की परिकल्पना भी की थी जो आज के सन्दर्भ में "2022 के नए भारत" का सपना है, जिसकी प्राप्ति हेतु हमें तन-मन-धन से प्रयत्नशील होना है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आधे-अधूरे' नाटक की संवेदना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आधे-अधूरे मोहन राकेश द्वारा रचित एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण नाटक है।

मोहन राकेश ने वर्तमान जीवन की विसंगतियों को इस नाटक के माध्यम से बखूबी चित्रित किया है। मध्यवर्गीय जीवन की तनावपूर्ण जीवनशैली इस नाटक के माध्यम से अपने पूरे चरम यथार्थ के साथ उजागर होती है।

महेन्द्रनाथ तथा उनकी पत्नी सावित्री के माध्यम से मोहन राकेश ने एक तो दाम्पत्य जीवन के संघर्ष को उजागर किया है दूसरा उस द्वंद्व का भी चित्रण किया है जिससे होकर भारतीय मध्यवर्ग का हर एक व्यक्ति होकर गुजरता है।

महेन्द्रनाथ तथा सावित्री पति-पत्नी हैं। दोनों साथ में रहकर भी एक दूसरे से अलग रहने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को विवश हैं, दोनों को एक दूसरे से हजार शिकायतें हैं, दोनों एक दूसरे से नजर तक नहीं मिला पाते, परन्तु एक ही घर में रहने के लिए विवश हैं। यह मध्यवर्गी के दाम्पत्य जीवन के संघर्ष को ~~झेल~~ झेलते लोगों की कथा है। "आषाढ़" का एक दिन के कालिदास के संघर्ष से भी इसकी तुलना की जा सकती है।

मध्यवर्गी का हर एक चरित्र सत्ता और सृजन के बीच झुला- झुलने के लिए विवश है। जीवन की हजार सुख- सुविधाएँ उसे अपनी ओर खींच रही हैं, वहीं दूसरी तरफ उसका व्यक्तित्व है, जो उसे समाज के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित कर रहा है।

कुल मिलाकर आधे- अधूरे नाटक मानवीय संवेदनाओं का बखूबी चित्रण करता है, इसे भारतीय रंगमंच शैली के अनुरूप रंगमंचित भी किया जा चुका है।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी कहानी में उपस्थित जादुई यथार्थवाद पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

जादुई यथार्थ हिन्दी कहानी में एक नवीन प्रयोग है। फ्रांस के लेखक जोला द्वारा प्रतिपादित इस शैली का प्रयोग हिन्दी साहित्य-जगत में भी सफलतापूर्वक किया जा चुका है।

जादुई यथार्थवाद — गहन यथार्थ को बखूबी चित्रित करने के लिए फैंटसी का सहारा लेता है, जिससे उस यथार्थ की अनुभूति अत्यन्त ही गहरी होती है।

उदयप्रकाश की "तिरीछ" इस शैली की सबसे महत्वपूर्ण रचना है। इसमें साँप काटने से एक पिता की मृत्यु हो जाती है, लेकिन साँप का काटना यहाँ बस एक फैंटसी की तरह प्रयुक्त हुआ है, जिसके सहारे पिता-पुत्र के संबंध के यथार्थ का चित्रण किया जा रहा है। उदयप्रकाश की ही " मूँगा, धागा और आम का बौर"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस शैली की एक अन्य महत्वपूर्ण कहानी है।

उदयप्रकाश के अलावा अन्य कई कहानिकारों ने भी अपनी कहानियों में जादुई यथार्थवाद का प्रयोग किया है। जिसमें संजीव की "बापू की घड़ी" एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण रचना है। पीली छत्री वाली लड़की, दरियाई घोड़ा इस शैली की अन्य महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

हिन्दी काव्य-जगत में फैंटसी का प्रयोग जैसा मुक्तिबोध ने यथार्थ को उजागर करने में किया है, कुछ वैसा ही प्रयोग इन कहानीकारों ने कहानी में किया है।

जादुई यथार्थवाद में प्रतीक के रूप में चरित्र आते हैं, भाषा शैली थोड़ी सी दुरूह है, कुछ नवीन शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। जन-सुग्राह्य न होने के बावजूद ये कहानियाँ अपनी एक अलग पहचान बनाने में सक्षम हुई हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation